डॉ. विशाल सिंह

माँ गंगा का बदलता स्वरूपः एक करुण पुकार

शिव की जटाओं से बहकर आई,
धरती पर जीवन की ज्योति जगाई।
शीतल, स्वच्छ, मनभावन धारा,
हर जन को मिला उज्ज्वल सहारा।

हिमालय की गोद में जन्मी धारा,
शिवाशीष जनित, हुई ये अपार धारा।
गंगा का जल, जो मोक्ष दिलाए,
हर हृदय को जीवन संदेश सुनाए।

फसलें सींची, दिया नव आधार,
धरती के कण-कण में अमृत संचार।
संसार सारा जिसकी महिमा गाए,
हर आँगन में जीवन का दीप जलाए।

अब वो निर्मल धारा कहाँ,
जो करती थी सबका उद्धार यहाँ।
प्रदूषण में घिरी, मलिन हो रही,
मानव की गलतियों से अब रो रही।

जलवायु का संकट बढ़ता रहा,
धरती का हर कण तपता रहा।
सपनों की बगिया मुरझाने लगी,
आशाओं की नैया डगमगाने लगी।

शिव की जटाओं से निकली जो धार,
अब पीड़ा में, उसकी व्यथा अपार।
प्रदूषण, ताप ने बंजर किए किनार,
गंगा व्यथित पुकारती, मत करो इसे बेकार।

पिघल रहे हैं हिमनद, बाढ़ें हो रही विकराल,
सूख रहे हैं सपने, बुझे हर सवाल।
प्रकृति का प्रकोप है, धरा हुई अधीर,
कब तक सहेगी गंगा, यह अश्रु जनित पीर।

सूख रही नदियों की हर धड़कन,
व्याकुल है गंगा, मत करो उत्पीड़न।
''विशाल'' पुकारे, अब जागो सभी,
गंगा संरक्षण ही प्रयास हो अभी।

संपर्क करें:
डॉ. विशाल सिंह,
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
रुड़की-247 667